17 फरवरी 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 22

फरवरी (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न

बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ शान्ति वाटिका में श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट बड़नगर के तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव रविवार, दिनांक 2 फर. से शुक्रवार 7 फर. तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याणकों के संदर्भ में प्रभावक प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया आदि विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हेभैया सागर, ब्र. मनोजजी जबलपुर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन के सहप्रतिष्ठाचार्यत्व में पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित मनीषजी पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित अनेकान्तजी कोलारस, पण्डित मयंकजी बण्डा, पण्डित आदित्यजी पंचोलिया, पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना के सहयोग से संपन्न हुआ। महोत्सव का मंच संचालन व निर्देशन पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर व पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन द्वारा किया गया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती संगीता-अनिलकुमारजी पाटोदी, बड़नगर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री हेमन्तकुमार-सुनीताजी गोधा बड़नगर, कुबेर इन्द्र श्री राजेन्द्रकुमार-अनिताजी काला बड़नगर एवं यज्ञनायक-नायिका श्री राजकुमार-अंजनाजी शाह इन्दौर थे। महोत्सव के मंदिर का उद्घाटन श्रीमती प्रज्ञा-विवेकजी कासलीवाल नीमच ने, ध्वजारोहण श्रीमती तीजाबाई स्व. कल्याणमलजी दोशी परिवार बड़नगर ने, सिंहद्वार का उद्घाटन श्री राजेन्द्रकुमारजी पाटनी छिन्दवाड़ा ने, यागमण्डल विधान का उद्घाटन श्री डी.एस.-शशिजी चौधरी नीमच ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री जयकुमारजी निलयजी संकेतजी जैन रतलाम ने किया।

दिनांक 4 फरवरी को सायंकाल विश्वप्रसिद्ध 70 फीट का मणिमंडित विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री डी.एस.-शशिजी चौधरी नीमच ने किया एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री कासलीवाल परिवार बड़नगर ने किया। इस पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर और आकर्षक 11 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। महोत्सव में तपकल्याणक के दिन सायंकाल वीतराग-विज्ञान पाठशाला, बड़नगर द्वारा **'रानी चेलना'** नामक नाटक का मंचन किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम में उज्जैन, इन्दौर, रतलाम, जावरा, बडवानी, रांची, खंडवा, मंदसौर, नीमच, पिड़ावा, भोपाल, सागर, अहमदाबाद, हिम्मतनगर, उदयपुर, बांसवाड़ा आदि स्थानों से पधारे लगभग 2500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 17 मई से बुधवार, 3 जून 2020 तक

कार्यक्रम स्थल :- चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.)

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

संपर्क सूत्र- ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) फोन - 0141-2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur@yahoo.com**

आवास प्रमुख - पण्डित सचिन शास्त्री (9924281114), पण्डित मनीष शास्त्री (8087922580)

सम्पादकीय -

पुद्गल द्रव्य एवं वैज्ञानिक आविष्कार

2

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

(गतांक से आगे...)

यहाँ हम मुख्यरूप से पुद्गल द्रव्य के बारे में चर्चा कर रहे हैं -

पुद्गल द्रव्य - जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पाया जाये वह पुद्गल है।[11] पुद्गल शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - पुद्+गल। पुद् अर्थात् जुड़ना; गल अर्थात् बिछुड़ना अर्थात् जिसका स्वभाव मिलना और बिछुड़ना हो, सो पुद्गल है। ब्रह्मदेव सूरि के शब्दों में - '**पूरणगलनस्वभावत्वात्पुद्गल: इत्युच्यते**'[12] अर्थात् पूरण और गलन का स्वभाव होने से पुद्गल कहलाता है।

छह जाति के द्रव्यों में एकमात्र पुद्गल द्रव्य ही है जो कि हमें आँखों से दिखाई देता है, यही एकमात्र मूर्तिक द्रव्य है। आचार्य उमास्वामी ने इसके लिए '**रूपिण: पुद्गला:**'[13] शब्द का प्रयोग कर इसे रूपी बताया है।

जो कुछ भी पंचेन्द्रियों के माध्यम से उपभोग्य है, ग्रहण करने में आता है, वह सब रूपी होने से पुद्गल ही है[14]; चाहे वे कर्णेन्द्रिय के विषय शब्द हों; स्पर्शन इन्द्रिय के विषय हवा आदि हो या फिर चक्षु इन्द्रिय के विषय प्रकाश-अन्धकार आदि ही क्यों न हो? सभी पुद्गल की ही अवस्थाएं हैं। तत्त्वार्थसूत्र में इनकी विविध प्रकार की अवस्थाओं को बताते हुए शब्द, बन्ध, सूक्ष्मता, स्थूलता, संस्थान (आकार), भेद, अन्धकार, छाया, आतप और उद्योतादि को पुद्गल की पर्यायें कहा है।[15]

इनके अतिरिक्त भी इन्द्रियों से ग्रहण करने में न आने योग्य अनंत पुद्गल परमाणु व सूक्ष्म स्कंध हैं। वे जब परस्पर मिलकर स्थूलरूप धारण करते हैं, तब चक्षु इन्द्रिय के विषय भी बन जाते हैं। यह बात **विज्ञान** के एक छोटे से दृष्टान्त से आसानी से समझी जा सकती है। यथा-ऑक्सीजन और हाइड्रोजन दो वायु हैं, यद्यपि ये दोनों ही नेत्र इन्द्रिय से अगोचर (न दिखने वाला) स्कन्ध है; तथापि इन दोनों के मिलाप होने पर नेत्र इन्द्रिय गोचर जल बन जाता है।

इसप्रकार की अनेक जातियों वाले पुद्गलों से यह सम्पूर्ण लोक भरा है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी लिखते हैं -

ओगाढगाढणिचिदो पोग्गलकाएहि सव्वदो लोगो।
सुहमेहिं बादरेहिं अणंताणंतेहिं विविधेहिं।।[16]

यह सम्पूर्ण लोक अनंतानंत विविध प्रकार के बादर एवं सूक्ष्म पुद्गलकाय के द्वारा ठसाठस भरा हुआ है।

हमारे जीवन में सर्वाधिक योगदान पुद्गल द्रव्य का ही दिखाई देता है, यही हमारे लिये सर्वाधिक सहयोगी है। यहाँ तक कि शरीर संरचना, हमारी भाषा/वचन, मन के विकल्प, श्वास का आना-जाना - ये सब पुद्गल ही है।[17]

(1) पुद्गल द्रव्य में अनंत शक्तियाँ -

जगत में बहुत जाति के पुद्गल स्कंध हैं। सभी की शक्तियाँ न्यारी-न्यारी है। जगत में दिखने वाले समस्त कार्यों में पौद्गलिक शक्तियाँ ही कार्य करती है। उदाहरण के तौर पर - विषरूप पुद्गल स्कन्ध में मारकत्व शक्ति है; किन्तु विष की कालान्तर में अमृत, औषधि आदि परिणति हो जाने पर उसमें जीवकत्व शक्ति प्रकट हो जाती है। सर्प के मुख में दूध विष हो जाता है। अग्नि में दाहकत्व, पाचकत्व आदि पर्यायगत शक्तियाँ है।

शब्द नामक पुद्गल स्कन्ध भी अनेक पर्यायगत शक्तियों को धार रहे हैं। गाली के शब्दों से दु:ख उत्पन्न होता है, प्रशंसा सूचक शब्दों से हर्ष उत्पन्न होता है। मंत्र आदि शब्दों से अनेक सिद्धियाँ हो जाती है, सर्प-बिच्छु आदि का विष उतर जाता है। तोप के या बिजली कड़कने के शब्दों से गर्भपात हो जाता है, दीवालें फट जाती हैं, हृदय को धक्का लगता है, किसी किसी के कान बहरे हो जाते हैं। इसप्रकार शब्द रूप पुद्गलों में अनेक शक्तियाँ विद्यमान हैं।[18] इसी प्रकार पौद्गलिक औषधियों में पाई जाने वाली उपचार सामर्थ्य किससे छिपी है।

आज विज्ञान के जितने भी आविष्कार या चमत्कार दिखाई देते हैं, वे वास्तव में पौद्गलिक शक्तियों का ही प्रतिफल है। कार्तिकेय अनुप्रेक्षा में पुद्गलों को शक्ति सम्पन्न बताते हुये लिखा है -

सव्वो लोयायासो, पुग्गलदव्वेहिं सव्वदो भरिदो।
सुहमेहिं बायरेहिं य, णाणाविहसत्तिजुत्तेहिं ।।[19]

अर्थात् सब लोकाकाश नानाप्रकार की शक्तिवाले सूक्ष्म और बादर पुद्गल द्रव्यों से भरा हुआ है। पाण्डे राजमलजी पंचाध्यायी नामक ग्रन्थ में कर्म प्रकृतियों के संबंध में चर्चा करते हुये पौद्गलिक शक्तियों के बारे में लिखते हैं - '**...यतोऽनभिज्ञोऽसि पुद्गलाचिन्त्यशक्तिषु।**'[20] हे जीव तुम पुद्गलों की अचिन्त्य शक्तियों के संबंध में अनभिज्ञ हो। कार्तिकेयस्वामी ने तो यहाँ तक कह दिया कि पुद्गल द्रव्य की कोई अपूर्व शक्ति दिखाई देती है।

'का वि अपुव्वा दीसदि, पुग्गलदव्वस्स एरिसी सत्ती।'[21]

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि पुद्गल द्रव्य बहुत शक्ति सम्पन्न द्रव्य है। जैन संतों ने उन शक्तियों का सूक्ष्मता से उल्लेख आगमों में किया है। साथ ही यह भी बताया है कि ये पौद्गलिक शक्तियाँ हमारे सच्चे सुखरूप प्रयोजन को सिद्ध करने में समर्थ नहीं है, अपने प्रयोजन की सिद्धि तो अनंत शक्ति संपन्न अपने आत्मा के लक्ष्य से ही होगी। **(क्रमश:)**

11. स्पर्शरसगंधवर्णवन्त: पुद्गला:। - तत्त्वार्थसूत्र, 5/23
12. बृहद्द्रव्य संग्रह, गाथा-15 की टीका
13. तत्त्वार्थसूत्र, 5/5
14. पंचास्तिकाय संग्रह, गाथा-82
15. शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽऽतपोद्योतवन्तश्च। - तत्त्वार्थसूत्र, 5/24
16. पंचास्तिकाय, गाथा-64
17. शरीरवांङ्मन:प्राणापाना: पुद्गलानाम्। - तत्त्वार्थसूत्र, 5/19
18. तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक, भाग-6, पृष्ठ-245
19. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा-206
20. पंचाध्यायी, अध्याय-2, श्लोक-922
21. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा-211

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

2

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 9 अतीन्द्रिय आनन्द कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर – जो समयसार पढकर इसमें प्रतिपादित आत्मवस्तु को तत्त्व व अर्थ से जानकर उस आत्मवस्तु में स्थित होता है, उसे अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त होता है।

प्रश्न 10 आचार्य अमृतचन्द्र ने किस ग्रन्थ को अक्षय चक्षु कहा है?

उत्तर – समयसार को।

प्रश्न 11 आचार्य अमृतचन्द्र ने प्रथम मंगलाचरण कलश में किसे नमस्कार किया है?

उत्तर – शुद्धात्मा को।

प्रश्न 12 ''समयसार'' शब्द से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का स्मरण कैसे हो सकता है?

उत्तर – यदि पर्याय की दृष्टि से विचार करें तो सर्वज्ञ पर्याय से संयुक्त 'अरहन्त और सिद्ध भगवान' (देव) ही समयसार हैं, समयसार ग्रन्थ 'शास्त्र' तो है ही और उसके कर्ता आचार्य कुन्दकुन्द 'गुरु' हैं। इसप्रकार समयसार शब्द से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का स्मरण हो गया।

प्रश्न 13 प्रथम कलश में शुद्धात्मा को कितने विशेषणों द्वारा समझाया गया है? नाम बताओ।

उत्तर – प्रथम कलश में शुद्धात्मा को चार विशेषणों के द्वारा समझाया गया है- 1. भावाय 2. चित्स्वभावाय 3. सर्वभावान्तरच्छिदे और 4. स्वानुभूत्या चकासते अर्थात् शुद्धात्मा सत्ता स्वरूप है, चैतन्यस्वभावी है, सर्वदर्शी एवं सर्वज्ञत्वादि शक्ति से सम्पन्न है और स्वानुभूति द्वारा प्रकाशित होता है। (क्रमशः)

शोक समाचार

बोरीवली (मुम्बई) निवासी श्री धीरजलाल पानाचंद शेठ का दिनांक 17 जनवरी को 86 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने 60 वर्ष की आयु में स्वाध्याय प्रारम्भ किया एवं अन्त समय तक तत्त्वश्रवण किया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राजेशभाई के पिताजी एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक जिनेश शास्त्री के दादाजी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11000/- रुपये प्राप्त हुए।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

7वाँ युवा शिविर संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 29 से 31 दिसम्बर 2019 तक 7वें अन्तरराष्ट्रीय युवा शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित उर्विशजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सम्मेदजी नातेपुते, पण्डित मंथनजी गाला मुम्बई, पण्डित अनुभवजी खनियांधाना आदि विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर गोष्ठी व प्रवचनों के माध्यम से लाभ मिला। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक अन्ताक्षरी, ट्रेजर हंट, वाद-विवाद प्रतियोगिता, आध्यात्मिक क्रिकेट, म्यूजिकल चेयर आदि अनेक ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। शिविर में 250 साधर्मियों ने लाभ लिया।

– नितिनभाई शाह, उल्लासभाई जोबालिया

हार्दिक बधाई !

मुम्बई निवासी एवं शाश्वतधाम-उदयपुर के ट्रस्टी श्री ब्रजलाल-मधु जैन के सुपुत्र **चि. मोनिल जैन** का शुभ विवाह श्री पुष्पराज-सरोज जैन की सुपुत्री **सौ. भविशा जैन** के साथ दिनांक 4 फरवरी को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में संस्था हेतु 2200/- रुपये प्राप्त हुए।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

विशेष सूचना

जैनपथप्रदर्शक का विशेषांक 'अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल' शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। यदि आपके पास उनसे संबंधित कोई महत्वपूर्ण फोटो हो तो हमें अवश्य उपलब्ध करावें।

उनका सरल/सहज जीवन किससे छिपा है? यदि उनके समागम/सान्निध्य के दौरान घटित कोई संस्मरण आपको ध्यान हो तो आप हमें अवगत करावें।

यदि आप लिख नहीं सकते तो हमें फोन पर बतायें, हम उसे भाषा देकर आपके नाम से ही प्रकाशित करेंगे।

यदि आपके पास जैनपथप्रदर्शक के पुराने (सन् 2000 के पूर्व) अंक हों तो वे भी भेजें।

आपके द्वारा भेजी गई सामग्री उपयोग में लेने के बाद सुरक्षित वापस भिजवा दी जायेगी।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर

मोबाइल – 9660668506

Email - ptstjaipur@yahoo.com

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी जन्म–त्रिशताब्दी वर्ष में आयोजित

मोक्षमार्गप्रकाशक विद्वत् संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

कारंजा (लाड़) (महा.) : आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी जन्म–त्रिशताब्दी महोत्सव वर्ष में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल, कारंजा के तत्त्वावधान में दिनांक 17 से 19 जनवरी तक आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी की मौलिक कृति मोक्षमार्गप्रकाशक पर आयोजित विद्वत् संगोष्ठी अनेक मांगलिक आयोजनपूर्वक सानन्द सम्पन्न हुई।

दिनांक 17 जनवरी को प्रात: श्री सतीशजी संघई परिवार, अमरावती एवं श्रीमती प्रभादेवी प्रकाशजी नाके परिवार, चिखली के करकमलों द्वारा उपस्थित समस्त विद्वानों के सान्निध्य में ध्वजारोहण किया गया। साथ ही 51 मोक्षमार्गप्रकाशक जिनवाणी को लेकर गुरुकुल के छात्रों के सान्निध्य में गाजे–बाजे के साथ जिनवाणी शोभायात्रापूर्वक संगोष्ठी का मांगलिक उद्घाटन किया गया।

उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के अध्यक्ष श्री सतीशजी संघई ने की। इस अवसर पर **ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, विदुषी विजयाताई भिसीकर कारंजा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, विदुषी धवलश्रीजी पाटील बेलगांव** आदि विद्वत्गण मंचासीन थे।

सभा का प्रारम्भ करते हुए डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर ने संगोष्ठी की उपयोगिता व महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने संगोष्ठी की सम्पूर्ण रूपरेखा स्पष्ट करते हुए संगोष्ठियों की आवश्यकता पर विचार व्यक्त किये। उद्घाटन सभा का संचालन पण्डित चिंतामणजी भूस, कारंजा ने किया।

विद्वत् संगोष्ठी में विभिन्न पांच सत्रों के माध्यम से सम्पूर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के स्वाध्याय एवं चर्चा का लाभ उपस्थित सभी साधर्मी भाई–बहिनों को प्राप्त हुआ।

● **प्रथम सत्र (पहला अधिकार–पीठबन्ध प्ररूपण)** – इसके अन्तर्गत प्रथम वक्ता के रूप में **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** ने पण्डित टोडरमलजी के जीवन से संबंधित अनेक प्रेरक प्रसंगों पर तथा **डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर** ने पंचपरमेष्ठियों के स्वरूप की विशेषता विषय पर अपना मार्मिक वक्तव्य दिया। तत्पश्चात् **पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पुणे, विदुषी ज्ञप्तिजी जैन देवलाली, पण्डित अंकितजी जैन, आरोन** ने उक्त अधिकार से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने वक्तव्य दिये। अन्त में सत्र के **अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं विदुषी विजयाताई भिसीकर, कारंजा** एवं **विशेषज्ञ विद्वान डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर** ने सभी वक्ताओं के विषय–चिंतन की उपलब्धि बताते हुए अपना मनोगत व्यक्त किया। सत्र का संचालन **सौ. प्रज्ञाजी डोणगांवकर, कारंजा एवं मंगलाचरण पण्डित संयमजी देशमाने, बीड** ने किया।

● **द्वितीय सत्र (दूसरा व तीसरा अधिकार संसार अवस्था, संसार–दु:ख एवं मोक्षसुख)** – इसके अन्तर्गत **पण्डित संतोषजी साहूजी परभणी, पण्डित विकासजी कंधारकर बालापुर, पण्डित संयमजी शेटे कोल्हापुर, पण्डित सतीशजी गवारे बांसवाडा, पण्डित गौरवजी शास्त्री जयपुर, पण्डित श्रेणिकजी शास्त्री नागपुर** ने उक्त अधिकार से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने वक्तव्य दिये। अन्त में सत्र के **अध्यक्ष डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर** एवं **विशेषज्ञ विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** ने सभी वक्ताओं के विषयों का विवेचन करते हुए अपना मनोगत व्यक्त किया। साथ ही अन्तिम वक्तव्य के रूप में **डॉ. संजीवजी गोधा, जयपुर** द्वारा 'मोक्षमार्गप्रकाशक में निरुपित कर्म की अवस्थाओं का निरूपण' विषय पर मार्मिक व्याख्यान प्राप्त हुआ। सत्र का संचालन **सौ. लीनाजी चवरे, कारंजा एवं मंगलाचरण सौ. शीतल रुईवाले, कारंजा** ने किया।

● **तृतीय सत्र (चौथा, पाँचवां व छठवाँ अधिकार–अगृहीत–गृहीत मिथ्यात्व)** – इसके अन्तर्गत **पण्डित पद्माकरजी मंजुले कोल्हापुर, पण्डित संजयजी राऊत औरंगाबाद, पण्डित प्रदीपजी माद्रप औरंगाबाद, पण्डित रवीन्द्रजी मसलकर अम्बड, पण्डित अभिषेकजी जोगी मुम्बई, पण्डित संयमजी जैन नागपुर, विदुषी प्रज्ञाजी जैन देवलाली** ने उक्त अधिकार से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने वक्तव्य दिये। अन्त में सत्र के **अध्यक्ष डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर** एवं **विशेषज्ञ विद्वान पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे, राजकोट** ने सभी वक्ताओं के विषयों का निरूपण करते हुए अपना मनोगत व्यक्त किया। सत्र का संचालन **पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर एवं मंगलाचरण सौ. सुचिताजी राठी, पुणे** ने किया।

● **चतुर्थ सत्र (सातवाँ अधिकार–जैन मिथ्यादृष्टि का स्वरूप)** – इसके अन्तर्गत **पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, डॉ. स्वर्णलताजी जैन नागपुर, पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज एवं डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर ने** चारों प्रकार के जैन मिथ्यादृष्टियों पर विवेचन करते हुए इस अधिकार के सभी महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपने मार्मिक व्याख्यान दिये। अन्त में सत्र के **अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर** एवं **विशेषज्ञ विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली** ने सभी वक्ताओं के विषय–विवेचन की सराहना करते हुए अपना मनोगत एवं विशिष्ट उद्बोधन दिया। सत्र का संचालन **पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पुणे एवं मंगलाचरण पण्डित शुभम शास्त्री, जयपुर** ने किया।

● **पंचम सत्र (आठवाँ व नवाँ अधिकार–उपदेश एवं मोक्षमार्ग का स्वरूप)** – इसके अन्तर्गत प्रथम वक्ता के रूप में **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली** ने 'सम्यक्त्व के विभिन्न लक्षणों का समन्वय' विषय को स्पष्ट किया। तत्पश्चात् **पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित रवीन्द्रजी काले सोलापुर, पण्डित पंकजजी संघई कारंजा, पण्डित अनेकान्तजी जैन सोनगढ़** ने अपने–अपने विषय का विवेचन किया। अन्त में सत्र के **अध्यक्ष ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली** एवं **विशेषज्ञ विद्वान विदुषी धवलश्रीजी पाटील बेलगांव** तथा **पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री नागपुर** ने सभी वक्ताओं के विषय–विवेचन की सराहना करते हुए अपना मनोगत एवं विशिष्ट उद्बोधन दिया। सत्र का संचालन **पण्डित संजयजी राऊत, औरंगाबाद एवं मंगलाचरण सौ. ज्योतिजी**

आलोक जैन, कारंजा ने किया।

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन प्रात: **नित्यनियम पूजन** एवं **श्री रत्नत्रय मण्डल विधान पण्डित अशोककुमारजी लुहाडिया, मंगलायतन** के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, राजकोट एवं पण्डित संजयजी राऊत, औरंगाबाद ने विधि–विधान पूर्वक सम्पन्न कराया। इसमें गुरुकुल के छात्रों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढकक्षा में डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन तथा **प्रात: कालीन प्रवचन** में ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली, विदुषी धवलश्रीजी पाटील जयपुर एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के मांगलिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दोपहर में डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर तथा **रात्रि में** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं धवलश्रीजी पाटील बेलगांव, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, राजकोट के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इसी अवसर पर कारंजा शहर स्थित श्री कंकुबाई श्राविकाश्रम की बालिकाओं एवं श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम के बालकों हेतु विशेष अनुरोध पर **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के **जीवन जीने की कला** विषय पर दो मार्मिक व्याख्यान भी हुए।

सायंकाल में **श्री जिनेन्द्र भक्ति**पूर्वक दिनांक 17 एवं 18 जनवरी को रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के शेष बचे विषयों पर **चर्चासत्र** का आयोजन हुआ, जिसमें समस्त उपस्थित भाई–बहिनों की अनेक शंकाओं का समाधान ऊहापोहपूर्वक विद्वानों द्वारा किया गया। रात्रिकालीन चर्चासत्र का संचालन पण्डित संयमजी जैन, नागपुर एवं विदुषी प्रज्ञाजी जैन, देवलाली ने किया।

दिनांक 19 जनवरी को प्रात: पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली के **क्रिया–परिणाम–अभिप्राय** पुस्तक का **मराठी अनुवाद** एवं गुरुकुल शतकपूर्ति के उपलक्ष्य में **डाक टिकट** का विमोचन श्री चन्द्रमोहनजी शहा, सोलापुर द्वारा किया गया।

यह संगोष्ठी मुख्यरूप से महाराष्ट्रप्रान्तीय शास्त्री विद्वानों हेतु आयोजित की गई थी, जिसमें 36 वक्ता विद्वानों के साथ महाराष्ट्रप्रान्तीय 56 शास्त्री विद्वान उपस्थित थे तथा सांगली, कोल्हापुर, बेलगांव, हुबली, औरंगाबाद आदि स्थानों से पधारे 435 साधर्मीजनों ने संगोष्ठी का लाभ लिया।

संगोष्ठी में **श्री स्वानुभव स्वाध्याय मण्डल, औरंगाबाद** के समस्त मुमुक्षु साधर्मी एवं कारंजा गुरुकुल के समस्त ट्रस्टीगणों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। संगोष्ठी के आमंत्रणकर्ता श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल कारंजा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा थे। **– श्री प्रमोद चवरे, श्री सुहास चवरे, श्री परिमल रुईवाले**

(पृष्ठ 7 का शेष...)

उनकी भी चिन्ता हो सकती थी कि ''मेरे जाने के बाद उनका क्या होगा, क्या चक्रवर्ती सम्राट के परिजन जमीन पर न आ जायेंगे? लोग क्या कहेंगे?''

आज मेरे पास तो है ही क्या?

परद्रव्य तो पर है, चक्रवर्ती की संपदा हो या एक तिनका, वह तो छूटा हुआ ही है, वह तो मेरा हुआ ही कब था, मैं ही उसके मोहवश उससे बंधा रहा, अब यह सब तो मेरे साथ जा ही नहीं सकता, तब भी क्या इसके मोह को ही ढोता रहूँ?

अरे! मैं यदि अभी न मरता और 10–20 वर्ष और भी जी जाता तो भी क्या होता, एक न एक दिन तो मरना ही था, क्या तब भी यही ऊहापोह न होता? तब फिर क्यों मैं आज भी विचलित हो रहा हूँ? क्यों नहीं वस्तु के इस स्वरूप को मैं सरलता के साथ स्वीकार कर पाता हूँ?

आज क्यों मैं इस मौत को कोसता हूँ कि यह बेवफा हो गयी है, इसका तो वादा था कि एक न एक दिन अवश्य ही आयेगी सो अपना वादा निभाने चली आयी, बेवफा यदि कोई हुआ है तो वह जिन्दगी हुई है जो जीवनभर कभी मुझे एक पल के लिए भी अपनी वफादारी के बारे में आश्वस्त तो कर न सकी पर आज अचानक इसतरह मेरा साथ छोड़ने के लिए तत्पर हो गयी।

हे भगवान! अब मैं क्या करूँ?

क्या अब मैं इसी ऊहापोह में ही उलझा रहूंगा? जीवनभर जो गलती नहीं की वह अब करूँगा?

जीवन में कभी भी मैं रुका नहीं, अटका नहीं, दुविधा में न रहा, तुरन्त निर्णय किये और क्रियान्वित भी कर डाले, पर अब इस अन्तकाल में मुझे क्या हो गया है? कोई निर्णय क्यों नहीं हो पाता है?

अरे! पहले भी मैं क्या करता था?

यह भी कर लूं, वह भी कर लूं, सब करने का निर्णय कर लेता था, बिना यह सोचे कि यह सब कुछ होगा कब और कैसे?

अब आज, जब यह सोचता हूँ कि सबकुछ कैसे होगा, तो निर्णय नहीं हो पाता है। पर अब मैं क्या करूँ?

यदि यह सब न होता तो कम से कम आज तो मैं अपने लिए जी पाता, आत्मा का चिन्तन कर पाता?

आज तक मैं अपने आपको कितना सौभाग्यशाली मानता था कि मुझे यह सब विभूति मिली है, पर आज समझा कि यह मेरा सौभाग्य न था, यह तो दुर्भाग्य का फल था, मानो यह सब मेरे लिए नहीं मैं ही इन सबके लिए हूँ; क्योंकि यह भोगने के काम तो आयी नहीं और अब आत्मकल्याण में भी बाधक बनकर खड़ी हो गयी है।

किसी और ने मुझे नहीं छला, मैं स्वयं अपनी भूल से ही दु:खी हुआ हूँ।

हाय! मैं कितना छला गया।

(क्रमश:)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

20 से 23 फरवरी	नागपुर	सत्पथ शिविर
28 फरवरी से 1 मार्च	जयपुर	वार्षिकोत्सव
4 से 9 मार्च	दिल्ली (विश्वास नगर)	सिद्धचक्र विधान
4 व 5 अप्रैल	दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)	दीक्षान्त समारोह एवं उपकार दिवस
6 अप्रैल	दिल्ली	महावीर जयन्ती एवं उपकार दिवस
21 से 25 अप्रैल	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
26 अप्रैल	गजपंथा	गुरुदेव जयन्ती
17 मई से 3 जून	अहमदाबाद	प्रशिक्षण शिविर

खुशखबरी! प्रवेश हेतु अवसर खुशखबरी!

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन

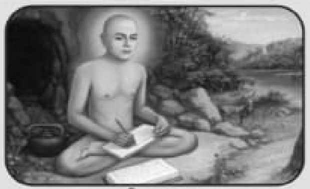

आचार्य समन्तभद्र

तृतीय सत्र हेतु प्रवेश प्रारम्भ

सत्रारम्भ – बुधवार 1 अप्रेल 2020

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मुमुक्षु आश्रम, कोटा स्थित आचार्य समन्तभद्र विद्या निकेतन अपना द्वितीय सत्र पूर्ण कर चुका है, जिसमें वर्तमान में 6 प्रांतों के 43 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। विद्या निकेतन का तृतीय सत्र बुधवार, 1 अप्रैल 2020 से प्रारम्भ हो रहा है, जिसमें कक्षा 8 में 21 छात्रों हेतु प्रवेश फार्म आमंत्रित है।

विद्या निकेतन की प्रमुख विशेषताएँ

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.ई. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- 7 वीं कक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50 प्रतिशत की छात्रवृत्ति।
- 80 प्रतिशत अंक से 10 वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8 वीं, 9 वीं एवं 10 वीं –तीनों वर्षों में पूरी स्कूल फीस उच्च अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति के रूप में वापस।
- सर्व सुविधायुक्त (लैट–बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन, ट्यूशन व बस आदि उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 21 छात्रों को प्रवेश।

नोट : प्रवेश फार्म 1 जनवरी से उपलब्ध होंगे, जिन्हें आप www.mumukshuaashram.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। प्रवेश प्रक्रिया मार्च में सम्पन्न की जायेगी।

सम्पर्क सूत्र :- गोमटेश जी शास्त्री (अधीक्षक) 7466947166, अभिनय जी शास्त्री 7737979912,
पीयूष जी शास्त्री (अधीक्षक) 9039290981; E-mail: matkota1008@gmail.com

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु सम्पर्क

बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा – 324007 (राज.)

''अभी तो मैं जवान हूँ, अभी तो सारा जीवन पड़ा है, अभी तो बहुत जीना है, यह कपोल कल्पना है जो हमें इस तरह से छलती है कि कहीं का नहीं छोड़ती।''

मरणान्तक व्यक्ति को सम्बोधन (1)

यदि जीवन के कुछ ही दिन शेष रहे हों तो...?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

इसी आलेख से –

– ''आज क्यों मैं इस मौत को कोसता हूँ कि यह बेवफा हो गयी है, इसका तो वादा था कि एक न एक दिन अवश्य ही आयेगी सो अपना वादा निभाने चली आयी; बेवफा यदि कोई हुई है तो वह जिन्दगी हुई है जो जीवनभर कभी मुझे एक पल के लिए भी अपनी वफादारी के बारे में आश्वस्त तो कर न सकी; पर आज अचानक इस तरह मेरा साथ छोड़ने के लिए तत्पर हो गयी।''

यह तो कौन नहीं जानता है कि एक दिन मरना तो सभी को है और फिर हमने इन्कार भी कब किया? सबने मृत्यु को स्वीकार तो कर ही लिया है, अन्यथा ये श्मशान और कब्रिस्तान क्यों बनाते? जीवन बीमा क्यों करवाते?

पर यह क्या?

इस सबका मतलब यह तो नहीं कि मौत आकर इस तरह असमय ही हमें दबोच ले, यह तो अन्याय है, छल है मेरे साथ और मेरे परिजनों के साथ।

मैंने तो सोचा था, एक दिन बहादुरी के साथ मरूंगा, जिस तरह शान के साथ जीवन जिया है, उसी तरह शान के साथ मौत का भी वरण करूंगा; पर यह निष्ठुर तो मौका ही नहीं देती है। अब इस तरह अचानक, असमय मैं इसका स्वागत कैसे कर सकता हूँ? भला यह भी कोई उम्र है मरने की?

अभी तो मुझे बहुत कुछ करना शेष है, कितने-कितने महत्वपूर्ण, कितने सारे काम हैं करने को; सभी तो अधूरे पड़े हैं और फिर सबसे महत्वपूर्ण काम, अपने आत्मकल्याण का, उसकी तो मैंने शुरुआत ही नहीं की है।

सोचा था यह मंदिर पूरा हो जाये तब अपने ही बनाए इस भव्य मंदिर में ही अपने धर्मध्यान की शुरुआत करूंगा; पर यह अवसर तो हाथ ही न आयेगा।

समझ नहीं आता है कि अब क्या करूँ, क्या न करूँ?

डॉक्टर करते हैं कि मेरे हाथ में 15 दिन हैं, इन 15 दिनों में क्या-क्या कर लूंगा?

करने को तो अब मात्र धर्म ही करना योग्य है, आत्मा की शरण में जाना ही योग्य है। योग्य तो है पर क्या मेरे लिए यह संभव है?

जिस आत्मा को जाना नहीं, पहिचाना नहीं, अब 15 दिन में मैं क्या कर पाऊँगा? और फिर करूँगा भी कैसे? जीवनभर जो कुछ उपलब्ध किया है, वह सबकुछ इस तरह बिखरा पड़ा है, क्या सब कुछ ऐसे ही छोड़ दूं? किसी को संभलवाऊँ नहीं?

अरे! यह कैसे संभव है? जिसके लिए जिया, जिस पर मरा उसे ऐसे ही कैसे छोड़ सकता हूँ? पर यदि उसी के इन्तजाम में लगा रहता हूँ तो वह मेरे तो किस काम आयेगा? अब मैं तो चला। पर इसका इंतजाम न करूँ तो यह सब इनके काम भी कैसे आयेगा, जिनके लिए मैं मर मिटा।

जो करना था, जो करना चाहिये था; वह तो जीवनभर किया नहीं और जो करने में सारा जीवन झोंक दिया वह मेरे किसी काम आया नहीं। अब मेरे सारे जीवन की कमाई देकर भी जब मैं जीवन का एक भी अतिरिक्त क्षण नहीं खरीद सकता हूँ, तब क्या उसी को संभालने और सम्भलवाने में ही जीवन के बाकी बचे 15 दिन भी गंवा दूं?

न गंवाऊँ तो क्या यूं ही लुट जाने दूं, बिखर जाने दूं सबकुछ?

जिसके एक-एक पौधे को सींचा, एक-एक पत्ती का जतन किया, क्या उस सम्पूर्ण बाग को यूं ही छोड़ दूं उजड़ जाने के लिए?

क्या योग्य है और क्या अयोग्य, कौन बतलायेगा? कौन समझाएगा मुझे? पर यदि किसी को सम्भलवाने बैठूं तो भी 15 दिन तो यूं ही बीत जायेंगे, कितना कुछ है बतलाने को, जीवनभर का कर्तृत्व और अनुभव! फिर है कौन जिसे यह सब संभला दूं? यदि कोई मिला होता तो अब तक संभला न देता? यदि आज तक कोई नहीं मिला तो क्या गारंटी है कि कभी कोई मिल ही जायेगा?

अरे! संभालने वाले हों भी तो क्या सभी को सम्भलवाने का समय मिल जाता है?

आज मैं क्रंदन कर रहा हूँ कि मेरे पास सिर्फ 15 दिन बचे हैं, पर इस तरह 15 दिन का समय किस-किसको मिलता है? यह मुई मौत तो कभी भी आ धमकती है और जब आ जाती है तो 15 दिन तो क्या 15 लम्हे तक तो नहीं देती है ये बेमुरब्बत।

रही बात कोई संभालने वाला मिलने की, सो मैं तो क्या चक्रवर्ती भरत को तो पूरे छह खण्ड में कोई न मिला था जो उसके राजपाट को संभाल लेता, यदि कोई संभाल लेता तो छह खण्ड का साम्राज्य बिखर क्यों जाता?

पर उनके बाद उनके 60 हजार पुत्रों में से और उनके आधीन हजारों मुकुटबद्ध राजाओं में से कोई भी तो ऐसा नहीं निकला जो छह खण्ड के साम्राज्य को संभाल सकता, तो क्या भरत ठहर गए? अटक गए?

भरत को इस विकल्प ने क्यों नहीं सताया कि अगर मैं यूं ही चल दिया तो छह खण्ड का क्या होगा?

इसी ऊहापोह में यदि भरत ठहर जाते तो क्या होता? वे आज कहाँ होते? कौन नहीं जानता कि आज उनके ही जैसे वे लोग (अन्य चक्रवर्ती) कहाँ हैं जो मरते दम तक सिंहासन पर डटे रहे। फिर कौन कहता है कि भरत के जाने से छह खण्ड बिखर गया? कहाँ बिखर गया, क्या बिखर गया? सब कुछ जहाँ और जैसा था, वहीं और वैसा ही तो बना रहा। सिर्फ एक वो चला गया जो यह मानता था कि इस सारे साम्राज्य को मैंने बांध रखा है और मैं ही इसका संचालन करता हूँ।

अरे! वो ऐसा कहाँ मानते थे (वे तो क्षायिकसम्यग्दृष्टि थे), यदि वो ऐसा मानते तो यूं ही कैसे छोड़ देते?

फिर एक बात और भी तो है, यदि आज वो इस तरह राजपाट न भी छोड़ देते तो क्या होता? आज नहीं तो कभी तो छोड़ना ही था। जीते जी न सही तो मरकर ही सही, छूटना तो था ही, छूट तो जाता ही। तब क्या होता? जो तब होता वो आज हो जाने दे!

राजपाट की तो एक न एक दिन यही नियति तय थी; पर यदि भरत समय पर न छोड़ देते तो मोक्ष की जगह नरक में होते।

आज मैं भरत जैसा मजबूर तो नहीं हूँ न? भरत के छह खण्ड के सामने मेरे पास है ही क्या? क्या लुट जायेगा?

अरे! भरत के पास तो 96000 पत्नियाँ और हजारों पुत्र थे, उन्हें तो

(शेष पृष्ठ 5 पर...)

ब्र. यशपालजी जैन (अन्नाजी) का अभिनन्दन

कारंजा (लाड) (महा.) : आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी जन्म–त्रिशताब्दी महोत्सव वर्ष में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल, कारंजा (लाड़) के तत्त्वावधान में आयोजित **विद्वत् संगोष्ठी** के पावन अवसर पर **दिनांक** 19 **जनवरी को प्रात:** जिनवाणी कण्ठपाठ प्रेरक, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रकाशन मंत्री **आदरणीय ब्र. यशपालजी जैन (अन्नाजी)** का **अभिनन्दन समारोह** मंगलमयी वातावरण में सम्पन्न हुआ। अभिनन्दन के पूर्व **उपस्थित सभी महाराष्ट्र प्रान्तीय शास्त्री विद्वानों** ने एवं **वरिष्ठ विद्वानों ने** भक्ति एवं बाजे–गाजे के साथ अन्नाजी को मुख्य मंच तक लाकर उन्हें कंधों पर उठाकर मंचासीन कराया गया। तत्पश्चात् जयकारे की ध्वनिपूर्वक अभिनन्दन सभा का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के अध्यक्ष श्री सतीशजी संघई ने की। सर्वप्रथम **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं महावीरजी पाटील, सांगली** ने उनके सम्पूर्ण जीवन को बताते हुए विचार व्यक्त किये। साथ ही श्री राजाभाऊ डोणगांवकर एवं श्री अशोक चवरे, कारंजा ने उनसे संबंधित जीवन की घटनाओं का स्मरण किया एवं डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने **प्रशस्ति वाचन** करते हुए अपना उद्‌बोधन दिया।

तत्पश्चात् **श्री महावीर ब्रह्मार्चाश्रम जैन गुरुकुल के अध्यक्ष श्री सतीशजी संघई ने माल्यार्पण, श्री भरतभाऊजी भोरे ने शॉल, श्री कीर्तिभाऊजी भोरे ने श्रीफल, श्री राजाभाऊ डोणगांवकर ने धर्मदुपट्टा तथा समस्त ट्रस्टियों** ने उन्हें **प्रशस्तिपत्र** भेंट करते हुए उनका स्वागत किया। पण्डित आलोकजी शास्त्री एवं सौ. ज्योति आलोक जैन ने श्रीफल एवं जिनवाणी भेंटकर उनका सम्मान किया।

इसके अतिरिक्त देश की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि के रूप में **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महा. जयपुर की ओर से** प्राचार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, **पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद्** की ओर से अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, **तीर्थधाम मंगलायतन** की ओर से पण्डित अशोकजी लुहाडिया, **महाराष्ट्र शास्त्री स्नातक परिषद् प्रतिनिधि** के रूप में श्री महावीरजी पाटील सांगली, **श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल, नागपुर** की ओर से श्री अशोकजी जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री, श्री नरेशजी जैन, श्री सुदीपजी जैन, **सत्पथ फाउंडेशन, नागपुर** की ओर से पण्डित विपिनजी जैन नागपुर तथा देश के **हिंगोली, परभणी, औरंगाबाद, बेलगांव, हुबली, सांगली, कोल्हापुर, पुणे** आदि अनेक स्वाध्याय मण्डल के मुमुक्षु भाई–बहिनों द्वारा जिनवाणी की अगाध सेवा हेतु उनका सम्मान करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की गई।

दिनांक 18 **जनवरी** को रात्रि में चर्चासत्र के पूर्व अन्नाजी हेतु **विशेष कण्ठपाठ स्पर्धा** का आयोजन किया गया, **जिसमें** गुरुकुल के छात्र दर्शन सोने, अभिषेक आदि पांच छात्रों ने तथा कु. गाथा जितेन्द्र राठी ने तत्त्वार्थसूत्र, आर्जव चिंतामण भूस ने छहढाला, पर्व प्रसन्न शेटे ने देव–शास्त्र–गुरु जयमाला सुनाई, जिसकी सभी ने अत्यधिक सराहना की। ये तीनों बालक–बालिका 3 से 5 वर्ष आयु के थे।

अन्त में अध्यक्षीय मनोगत के पश्चात् आदरणीय अन्नाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए स्नातकों से कहा कि अभिनन्दन की अपेक्षा रखे बिना अभिनन्दनीय कार्य करना श्रेयस्कर है। श्री सतीशजी संघई ने आभार व्यक्त किया। **– श्री प्रमोद चवरे, श्री सुहास चवरे, श्री परिमल रुईवाले**

सिंगापुर में अपूर्व धर्मप्रभावना

सिंगापुर : यहाँ शांतिनाथ जिनालय में दिनांक 24 जनवरी से 1 फरवरी तक डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

यहाँ रत्नत्रय विधान के अतिरिक्त प्रतिदिन दोनों समय आत्मा की 47 शक्तियाँ, जैन कर्म सिद्धान्त, जैन संविधान, जीवन की दुर्लभता, सच्चा धर्म क्या है आदि विविध विषयों पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। एक दिन विशेष रूप से धार्मिक क्रिकेट भी खिलाया गया।

संपूर्ण आयोजन श्रीमती आरती–अशोकजी पाटनी के कुशल नेतृत्व में श्री साकेत जैन, सचिन जैन, नयन जैन एवं विक्रम जैन के सहयोग से संपन्न हुये। वहाँ हुए सभी प्रवचन **YouTube** पर **drsanjeevgodha** चैनल पर **Play List** के माध्यम से देखे जा सकते हैं।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह–सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2020

प्रति,

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com